आच्छे दिन पाछे गए. हरि सक किया नहीं हेत।
अब पछताए क्या होत है? जब चिडिया चुग गई खेत।।

दादू दावा मत. बिन दावा दिन काट।
बहुतक सौदा कर गए. इस पंसारी की हाट।।

तो आप महापुरूषें को ज्ञान देने का मेरा प्रयोजन आप समझ गए होंगे और यदि मैं कही गलती पर हूं तो कृपया आप मेरा मार्गदर्शन करें। परन्तु बात बुध्दि के दर्जे की न हो अपितु अनुभव के आधार पर मार्गदर्शन की बात हो, क्योंकि परमात्मा की लीला मनुष्य क्या समझेगा? उसकी महिमा ;ज्ञानद्ध अपरम्पार है। मनुष्य कवल अपना अनुभव ही बता सकता है।

।। मेरी धार्मिक खोज मे से ।।